International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 137-140

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 137-140
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 29-09-2020
Accepted: 10-10-2020

Dr. Pragya
Ex Student, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Janakpuri
Balahar Campus, Himachal Pradesh, India

Corresponding Author:
Dr. Pragya
Ex Student, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Janakpuri
Balahar Campus, Himachal Pradesh, India

मानवीय–सभ्यता का आदर्शः रामायण

Dr. Pragya

सारांश
यह कहते हुये परम प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव हो रहा है कि रामायण विश्वसाहित्य का आदिकाव्य है। रामायण का समय त्रेतायुग का माना जाता है। ग के अनुसार समय को चार युगों में बाँटा गया है– सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग। जिसमें एक कलियुग का वर्ष– 4,32,000, द्वापर का– 8,64,000, त्रेता का– 12,96,000 तथा सतयुग का– 17,28,000 होता है। इस गणना के अनुसार रामायण का समय न्यूनतम 8,70,000 वर्ष सिद्ध होता है। बहुत से विद्वान् इसका तात्पर्य ई पू.– 8000 से लगाते हैं। अन्य विद्वान् इसे इससे भी पुराना मानते हैं।
महर्षि वाल्मीकि के मानस सागर से निःसृत रामायण रूपी ज्ञानगङ्गा में मानवीय सभ्यता के सभी पक्षों का उदात्त चित्रण इसमें समाविष्ट है। इस ज्ञान–विज्ञान की सरिता में अवगाहन कर कोई भी सभ्यता अपनी आत्मिक, बौद्धिक एवं मानसिक मलिनता को दूर कर सकती है। किसी सभा, समुदाय या समाज में उठने बैठने तथा रहने योग्य मनुष्य को सभ्य कहा जाता है, उसी के भाव को सभ्यता कहते हैं।
सभ्यता हमारा बाह्य रहन–सहन, खान–पान, आचरण, भौतिक–विकास पारिवारिक सामाजिक संस्कार आदि का परिचायक होता है। संस्कृति हमारी आन्तरिक सोच ज्ञान–विज्ञान आदि प्रेरक तत्त्व को बताती है। वैसे तो आन्तरिक ही बाह्य आचरण का कारण होता है। रामायण मानवीय सभ्यता के विकास में परम सहयोगी है तथा सदा रहेगी।

मूल शब्दः मानवीय–सभ्यता, मानवीय–सभ्यता, रामायण, ज्ञान–विज्ञान

प्रस्तावना
ब्रह्मर्षिवाल्मीकि ने आदिकाव्य श्रीमद्रामायण की रचना कर सर्वलोकों के इष्ट सभी को रमाने वाले भगवान् श्रीराम के दिव्यचरित्र से सभी को अवगत कराया। शायद ही कोई ऐसा होगा जो वाल्मीकि–रामायण के रचयिता भगवान् श्रीराम के परमभक्त ब्रह्मर्षि वाल्मीकि का नाम न सुना हो। बहुत कम लोग ही जानते होंगे कि आदिकवि वाल्मीकि भगवान् श्रीसीताराम के मधुरोपासक भक्त थे, तभी तो वाल्मीकि–रामायण में उन्होंने भगवान् श्रीसीताराम के परम माधुर्य का बहुत ही सजीव एवं मनोहारी वर्णन किया है।
श्रीरामकथा अथवा रामायण को आदिकाव्य, महाकाव्यादि कहकर स्मरण किया जाता है तो उसके रचयिता को आदिकवि। आज रामकथा का जो रूप प्रचलित अथवा प्रसिद्ध है, वह रामचरितमानस है और मानस जन–जन के मन में बसा है। इसके अतिरिक्त भी भारत की लगभग हर भाषा में रामायण लिखी गई है, किन्तु सबके मूल में वही आदिकवि द्वारा लिखित वाल्मीकी– रामायण है। वही आदिकाव्य एवं श्रीराम का जीवन्त इतिहास है।
विद्वानों के बीच वाल्मीकि आश्रम के बारे में मतभेद उपस्थित होने पर भी तमसा और गंगा आदि नदियों के किनारे इनका आश्रम होना चिह्नित किया जाता है, किन्तु यह तमसा वह नदी नहीं है, जिसका वर्णन गंगा के उत्तर तथा अयोध्या के दक्षिण में किया जाता है। किन्तु वाल्मीकि के अनुसार तमसा गंगा से अधिक दूर नहीं। विद्वानों का मत है कि वाल्मीकि भ्रमणशील थे, वे प्रायः घूमते ही रहते थे। अतः एकाधिक स्थानों पर इनका आश्रम होना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं। ये श्रीराम के वनवास के समय चित्रकूट के पास थे तो राम के राज्यारोहण के समय बिठूर में गंगा तट पर। उन्हीं दिनों इन्होंने नारदजी से पूछा था कि इस समय धरती पर कौन सा ऐसा गुणवान्, सच्चरित्र, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यव्रत, दृढ़प्रतिज्ञ, जितेन्द्रिय और प्रियदर्शन पुरुष है? जिनके क्रोधित होने पर देवता भी डर जाए। उत्तर में नारदजी ने रामकथा कही जो राज्यारोहण तक समाप्त हो गई। जैसे–[1]

'तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम्।।'

रामायण के बारे में कहा गया है कि–[2]

'यो वेद वेदवदनं सदनं हि सम्यक्।
'यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।

तावद्रारामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।'
काव्य का प्रयोजन होता है–[3] **'रामादिवद्वर्तितव्यं न रावणादिवत्।'** इससे ज्ञात होता है कि हमें श्रेष्ठ पुरुषों राम आदि के समान आचरण करना चाहिये रावण आदि के समान नहीं।

रामायण–कालीन सामाजिक दर्शन
प्रत्येक व्यक्ति अपने ज्ञान एवं विचार के अनुरूप ही आचरण करता है तथा जैसा करता है वैसा ही बन जाता है, जीवन का यही सूत्र है। महर्षि वाल्मीकि ने रामचरित्र के माध्यम से मानवीय जीवन या मानवीय सभ्यता के विकास में अपेक्षित सभी गुणों की आवश्यकताओं की चर्चा की है, जिसकी विश्व की प्रत्येक सभ्यता को सदा आवश्यकता रहेगी। रामायण में वर्णित रामराज्य की सभी प्रजा वेदज्ञ थी, ज्ञान–सम्पन्न, शूरवीर, संसार के कल्याण में संलग्न तथा समस्त मानवीय गुणों जैसे दया, सत्यपरता, पवित्रता, उदारता आदि से युक्त थे। जैसे–[4]

'सर्वे वेदविदः शूराः सर्वे लोकहिते रताः।
सर्वे ज्ञानोपसम्पन्नाः सर्वे समुदिता गुणैः।।'

समाज में सभी वर्ण (ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र) एक दुसरे का सहयोग करते रहते थे। जातिभेद या वर्णभेद की दूषित भावना नहीं थी तथा सभी को धर्मानुसार समान अधिकार तथा न्याय प्राप्त होता था। जैसे–[5]

'ब्रह्मक्षत्रमहिंसन्तस्ते कोशं समपूरयन्।
सुतीक्ष्णदण्डाः संप्रेक्ष्य पुरुषस्य बलाबलम्।।'

रामायण एक ऐसे सभ्य समाज के निर्माण का संदेश देता है जिसमें धार्मिक न्यायप्रिय राजाओं के सुशासन में सम्पूर्ण समाज धन–धान्य से युक्त हो। सभी गौ आदि पशुओं से समृद्ध, अश्वादि आशुगामी वाहनों से युक्त तथा कोई भी निर्धन न हो। आधुनिक सभ्यता में हम लोग अन्धविकास में आगे दौड़ रहे हैं जहाँ सम्पूर्ण विश्व विकास के नाम पर विनाश की तरफ बढ रहा है। औद्योगिक विकास यान वाहनों के प्रदूषण से प्रकृति को नष्ट करने पर तुले हुये हैं। रामायण के अनुसार धन–धान्य–समृद्धि का मूलश्रोत गौमाता है। वेद में भी कहा गया है कि–[6] 'धेनुः सदनं रयीणाम्।' अर्थात् गाय सर्वविध धन–समृद्धि की खान है।
प्राकृतिक एवं शुद्ध गौवंश की रक्षा कर हम मानवीय सभ्यता को स्वस्थ एवं दीर्घायु कर सकते हैं तथा अश्वयुक्त वाहनों और तात्कालीन बिना ईंधन से उड़ने वाले हवाई जहाजों (पुष्पक विमान) की खोज कर उनके प्रयोग से वैश्विक पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त कर सकते हैं।
रामायणकालीन सभ्यता का वर्णन करते हुये वाल्मीकिजी कहते हैं कि अयोध्या नगरी में कोई नर–नारी कामी, कन्दर्प, निष्ठुर, मूर्ख (अविद्वान्) और नास्तिक नहीं था। सभी नर नारी धार्मिक, जितेन्द्रिय महर्षियों के समान सच्चरित्र एवं शालीन थे। सभी लोग नित्य अग्निहोत्र करते थे। कोई क्षुद्रवृत्ति वाला या चोर नहीं था। सभी अंहिसा यम–नियमों का पालन करने वाला और दानी थे। कोई भी व्यक्ति पागल, तनावग्रस्त या व्यथित चित्त वाला नहीं था। सभी पुत्र–पौत्र सहित आनन्द पूर्वक दीर्घायु जीवन व्यतीत करते थे।
इस प्रकार तात्कालीन सभ्यता का चित्रण हमें उस तरह का एक समृद्ध, ज्ञानवान्, शीलवान् तथा धार्मिक मानवीय सभ्यता की महत्ता को बताता है। आज उसी का अनुसरण कर अपनी विकृत सामाजिक व्यवस्था को दूर कर एक सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है।

संस्कार
एक सभ्य मनुष्य एवं समाज तथा विश्व के निर्माण के लिए सोलह संस्कारों (गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त) की मानवजीवन में अत्यन्त महत्ता है। जिन कर्मों से मानव जीवन में हम लोग उत्कृष्ट गुणों का आधान कर सके उसे संस्कार कहा जाता है। वैदिक गृह्य सूत्रों में इनका विस्तार से वर्णन मिलता है। यदि हम मनुष्य को श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति को संस्कारित करना होगा। सच्चे अर्थों में एक श्रेष्ठ व्यक्ति ही एक सभ्य मनुष्य कहलाने का अधिकारी होता है तथा उसी से श्रेष्ठ सभ्यता का निर्माण होता है।
रामायण में गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म तथा नामकरण आदि संस्कारों का उल्लेख मिलता है। जैसे महर्षि वशिष्ठ द्वारा राम लक्ष्मण आदि के नामकरण का वर्णन वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड में देखने को मिलता है। हमें अपने प्रिय जनों के नाम सार्थक रखने चाहिए सुन्दर एवं श्रेष्ठ शब्दों का प्रभाव भी सुन्दर व श्रेष्ठ होता है। शास्त्रों में शब्द तथा अर्थ का नित्यसम्बन्ध माना जाता है।

पञ्चयज्ञ परम्परा
रामायणसभ्यता पञ्चयज्ञ की परम्परा को अनुसरण करती थी। वैदिक सभ्यता मे ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ (अग्निहोत्र) पितृयज्ञ अतिथियज्ञ तथा बलिवैश्वदेवयज्ञ को पञ्चमहायज्ञ के नाम से जाना जाता है। वैसे तो यज्ञशब्द अपने आप में ही बहुत विस्तारित अर्थ रखता है, जैसे देवपूजा, बड़ों का सम्मान, संगतिकरण यानि मिलकर संगठित होकर चलना तथा दान परोपकार की भावना आदि दिव्यभावयज्ञ के अन्तर्गत समाहित होते हैं। यह यज्ञ ही समस्त भुवन को एक सूत्र में बाँध कर रखनेवाला परम उपाय एवं साधन है, सर्वविध सुख समृद्धि तथा शान्ति प्रदान करने वाला है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को ये पाँच यज्ञ अवश्य करने चाहिए।
इस प्रकार रामायण की सभ्यता का अनुसरण आधुनिक सभ्यता की आध्यात्मिक, आधिदैविक, सामाजिक, पारिवारिक आदि समस्याओं को दूर कर एक श्रेष्ठ सभ्यता के निर्माण में सहयोग कर सकता है।[7]

पारिवारिक आदर्श
आज की भोगवादी सभ्यता के कारण पूरे विश्व में परिवार विघटित हो रहे हैं। पश्चिमी देशों में इसकी दुर्दशा हम देख सकते हैं। रामायण में पारिवारिक जीवन का एक उच्च आदर्श प्रतिपादित है जिससे हम सभी सुपरिचित हैं। राम पिता की आज्ञा मानकर साम्राज्य छोड़कर वन में चले जाते हैं, सीता राजभवन का ऐश्वर्य त्याग कर पातिव्रत धर्म का पालन करने भयंकर अरण्य में चली जाती है और लक्ष्मण भी भाई व भाभी की सेवा में राजसुख को त्यागकर उनके अनुगामी बनते हैं।
रावण जब सीता को छल से हर कर ले जाता है और श्रीराम एवं लक्ष्मण वन में भटक रहे थे, तभी मार्ग में उन्हें आभूषण मिलते हैं, जो माता सीता के थे। परन्तु लक्ष्मण कहते हैं कि प्रभु मैं इन आभूषणों को नहीं पहचानता, मैं तो केवल पैर के बिछुए को ही पहचानता हूँ। वह श्रीराम को बताते हैं कि प्रभु मैंने अपनी माता के दूसरे आभूषणों को देखने की चेष्टा नहीं की, केवल चरणों को ही देखा है। लक्ष्मण के समान जिस घर में देवर रहेगा उस घर का बाल बांका भी नहीं हो सकता, सभी के हृदय से वैर नामक जहर पनपना बन्द होकर आपसी प्रेम व भाईचारा बढेगा।
दूसरी तरफ भरत राजसत्ता पाकर भी अपने को भाइयों के बिना अधूरा समझता है और त्यागपूर्वक राज्य करते हुये अपने भाइयों के लौटने की प्रतीक्षा करता है। यहाँ कौशल्या एक आदर्श माता हैं। अपने पुत्र राम पर कैकेयी के द्वारा किये गये अन्याय को भुला कर

वे कैकेयी के पुत्र भरत पर उतनी ही ममता रखती हैं जितनी कि अपने पुत्र राम पर।

हनुमान् एक आदर्श भक्त हैं, वे राम की सेवा के लिये अनुचर के समान सदैव तत्पर रहते हैं। शक्तिबाण से मूर्छित लक्ष्मण को उनकी सेवा के कारण ही प्राणदान प्राप्त होता है। इनके पावन–चरित्र का स्मरण ही क्षुद्र स्वार्थों के कारण टूटते हमारे दाम्पत्य–जीवन एवं परिवारों को बचा सकता है। रामायण हमें सही रास्ते पर ले जाने का संदेश देती है। यह हमें बखूबी सिखाती है कि माता–पिता, पति–पत्नी, भाई–बन्धु व राजा–प्रजा के क्या कर्त्तव्य हैं।

नारी की स्थिति

किसी भी सभ्यता का मानदण्ड वहाँ की नारियों की स्थिति से होती है। तथाकथित सभ्य लोग स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं या उनकी शैक्षणिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थिति कैसी है? इस से उस सभ्यता की श्रेष्ठता तथा निकृष्टता का ज्ञान होता है।

रामायण में वर्णित कौशल्या, सीता, अनसूया आदि का उदात्त एवं पवित्र चरित्र आज की नारी को बहुत कुछ सीख दे सकता है। आज की कुछ नारी पढ़–लिख कर सुन्दर वस्त्र पहन कर बाह्य रूप से सभ्य तो हो गयी, किन्तु शालीनता पवित्रता त्याग आदि गुणों से रहित होती जा रही है जिसका उसके जीवन तथा उसके परिवार में सुख शान्ति का अभाव सा होता दिखाई दे रहा है। नारियों के प्रति सम्मान की तो रामायण में पराकाष्ठा ही दिखाई देती है।

जटायु नामक एक पक्षी भी स्त्री का अपमान होते नहीं देख सकता था, जिसने वृद्ध होते हुये भी अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुये परम शक्तिशाली रावण के साथ युद्ध किया। यह बताता है कि हमें स्त्री के सम्मान की रक्षा करनी चाहिए।

पर्यावरण

आज की हमारी आधुनिक अन्धी विकासपरम्परा हमारे पर्यावरण को नष्ट करने में लगी हुई है। रामायण में नदी, सरोवर, वन, वृक्ष, वायु तथा समग्र प्रकृति को देवीतुल्य उपासना एवं व्यवहार का वर्णन है। पशु–पक्षी के प्रति तो मित्र के समान व्यवहार देखने को मिलता है। क्रौञ्चवध से करुणार्द्र–हृदय महर्षि–वाल्मीकि के मानस सरोवर से रामायणरूपी काव्यगङ्गा का अवतरण इस भूलोक पर हुआ। अतएव हमें आज समस्त प्रकृति का संरक्षण एवं आराधन करना चाहिए।

वास्तु एवं विज्ञान

रामायण जहाँ त्यागवादी सभ्यता को दर्शाता है वहीं एक श्रेष्ठ मानवीय सभ्यता के विभिन्न पहलुओं को भी दर्शाता है। वहां अयोध्या के वर्णन में श्रेष्ठ नगरनिर्माण, मार्ग, उद्यान, दुर्ग, परिखा, विचित्रगृह, मणिनिर्मित तोरण, सुरक्षित सुसज्जित घर, यन्त्र, तोप आदि अस्त्र–शस्त्र, बिना ईंधन के पुष्पक विमान आदि का वर्णन प्राप्त होता है। विश्वकर्मानिर्मित लंकापुरी, अलकापुरी, रामसेतु आदि का निर्माण आज कि हमारी सभ्यता के लिए एक उदाहरण है एवं अनुकरणीय है।

रामायण की साहित्यिक महत्ता

रामायण भारतीय संस्कृति का मूलस्रोत माना जाता है। यह एक ऐसा विषय है जिस पर सैकड़ों वर्ष से लोग ग्रन्थ लिखते आ रहे हैं, फिर भी अघाते नहीं हैं। यह ग्रन्थ भारत की विभिन्न भाषाओं के अलावा विश्व की कई अन्य भाषाओं में भी लिखा गया है।

साहित्यिक रचनाओं का उपजीव्य ढूँढने के लिए रामायण आज भी समस्त भारतीय भाषाओं के लिए अक्षयकोष है। इसके साथ ही रामायण हमारी राष्ट्रिय अस्मिता अैर सांस्कृतिक चेतना का निर्विकल्प आश्रय भी है। रामायण के अनुशीलनमात्र से ईश्वर के प्रति श्रद्धा और प्रेम का उदय होता है, भक्ति उत्पन्न होती है। अन्तःकरण शुद्ध होता है। इसलिए यह एक विलक्षण एवं चिरञ्जीवी ग्रन्थ है।

साहित्यिक दृष्टि से भी यह विश्वसाहित्य की अनमोल रचना है। इस पर धारावाहिक और फिल्मों का भी निर्माण हो चुका है। विश्व की अनेक भाषाओं में इस कथा का अनुवाद हो चुका है। रामायण में तत्कालीन समाज के रीति–रिवाजों और शासनपद्धति का वर्णन किया गया है। शाश्वत मूल्यों के विकास में रामायण की महत्ता आज भी उतनी है जितनी प्राचीनकाल में थी। रामायण की रचना मानवजीवन के सर्वांगीण विकास और शाश्वत–जीवन–मूल्यों को प्रेरित करने के उद्देश्य से की गई है। जैसे– भातृ–प्रेम, त्याग, सत्य, प्रतिज्ञा–पालन, आज्ञा–पालन आदि।

रामायण की विश्व–व्यापकता

रामायण की विश्व–व्यापकता तो उस समय से बन चुकी थी जब 19वीं शदी में लाखों निर्धन भारतीय विशेषरूप से अवध एवं पूर्वी उत्तरप्रदेश तथा बिहार के निवासी रोजी–रोटी की खोज में भारत से सुदूर फिजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गुआयना, सूरीनाम, जमैका, आदि देशों में पहुंचे और अपने साथ तुलसीदासकृत रामायण ले गए, जो हर संकट और संघर्ष में उनका सम्बल और सहयोगी बनी।

प्रवासी भारतीयों की दूसरी धारा भी पूर्व और पश्चिम के अनेक देशों में गई, जो अपेक्षाकृत नवीन है। विशेषरूप से 20वीं शदी की और उसमें भी 1947 के भारत विभाजन के बाद की। गत शदी में ही विभाजन से पूर्व लाखों की संख्या में दक्षिण भारतीय और गुजराती क्रमशः मलाया, वर्मा, श्रीलंका तथा अफ्रीकी आदि देशों में फैल चुके थे।

ब्रिटेन और अमेरिका में भारतीयों का प्रवास अधिकांश इसी शदी का है।[8] इन भारतीयों के साथ भी रामायण की धारा विश्व के कोने–कोने में फैली, जिसका माध्यम चाहे रामचरित–मानस रहा हो या वाल्मीकि–रामायण अथवा कंबन आदि रामायण।

रामायण की तीसरी या अत्यन्त सशक्त धारा पूर्व और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में गई, जो इन देशों की संस्कृति की अभिन्न अंग बनकर छा गई। चीन में भी जातक कथाओं के माध्यम से यह धारा पहुंच गई। इस धारा का प्रभाव इतना शक्तिशाली था कि वहां के कवियों ने अपने देशों की भाषाओं में रामायणें रची और उनमें स्थानीय रंग भर दिए। इस धारा का और अधिक प्रवाह यह हुआ कि इन देशों में रामायण में वर्णित नगरों, नदियों, व्यक्तियों आदि के नाम रखे जाने लगे। फलस्वरूप कालान्तर में स्थानीय लोग यह मानने लगे कि रामायण की घटनाएं उनके देश में घटित हुई।

इन रामायणों में घटनाओं के निर्वाह में भले ही अनेक अंतर है, किंतु स्रोत वाल्मीकि–रामायण ही मानी जाती है। कुछ रामायणों में विभिन्न प्रसंगों का निर्वाह रामकथा के विद्वानों या विज्ञपाठकों को हास्यास्पद भी लग सकता है। यहां का रामायण धर्म और आध्यात्म से अछूती है, किंतु संस्कृति से पूरी तरह जुड़ी है। इसलिए भारत के अतिरिक्त एशियाई देशों की रामायणधारा को हम सांस्कृतिक धारा कह सकते हैं। रामायण की इस धारा की कुछ झलक दक्षिण–पूर्व एशिया में भी मिलती है।

सच बात तो यह है कि विश्व के इसी भाग ने राम और उनके देश को भली–भाँति समझा भी तथा उनकी महत्ता भी स्वाकीर की। थाईलैंड के सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन में राम पूर्णतः समरस हैं। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि इस देश में कहीं–कहीं राम और बुद्ध के बीच कोई पार्थक्य की रेखा नहीं है।

यहाँ के जीवन में दोनों का सह अस्तित्व है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण बैंकाक स्थित शाही बुद्ध मंदिर है, जिसमें नीलम की मूर्ति हैं। यह मंदिर पूरे देश में बहुत प्रसिद्ध है तथा दूर–दूर से लोग इसके दर्शनार्थ आते हैं। मंदिर की दीवारों पर संपूर्ण रामकथा चित्रित है। इस देश की अपनी रामायण है– रामकियेन, जिसके रचयिता नरेशराम प्रथम थे। थाईलैंड में राम के दर्शन एक स्थान पर अपने भव्यरूप में होते हैं और वह है बैंकाक स्थिति राष्ट्रिय

संग्रहालय। इस संग्रहाल्य में जैसे ही आप प्रवेश करेंगे धनुर्धारी राम के दर्शन होंगे।

अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि थाईलैंड में एक अयोध्या है और लवपुरी (लोपबुरी) भी। थाईवासियों का विश्वास है कि रामायण की घटनाएँ उनके देश में ही घटीं। थाई जीवन में राम की लोक–प्रियता की जड़ें कितनी गहरी हैं, इसके प्रमाण यहाँ के शास्त्रीय नृत्य हैं, जिनमें रामकथा के दर्जनों प्रसंग प्रदर्शित किए जाते हैं। वे नृत्य आज भी थाईलैंड में लोकप्रिय हैं।[9]

कम्बोडिया में श्रीराम के महत्त्व का जीता–जागता सबूत है अंगकोरवाट, जो दक्षिण–पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा प्रतीक है। यहाँ बुद्ध, शिव, विष्णु, राम आदि सभी भारतीय देवों की मूर्तियाँ पाई जाती हैं। इसका निर्माण ग्यारहवीं शदी में सूर्यवर्मन द्वितीय ने करवाया था। इस मंदिर में कई भाग हैं– अंगकोरवाट, अंगकोर थाम, बेयोन आदि। अंगकोरवाट में रामकथा के अनेक प्रसंग दीवारों पर उत्कीर्ण हैं। जैसे– सीता की अग्निपरीक्षा, अशोकवाटिका में रामदूत हनुमान् का आगमन, लंका में राम–रावण युद्ध, वालि–सुग्रीव युद्ध आदि। यहाँ की रामायण का नाम रामकेर है, जो थाई रामायण से बहुत मिलती–जुलती है।

इस प्रकार लाओस और वर्मा आदि बौद्ध देशों के जीवन में भी रामकथा का महत्त्व है, जो नृत्य नाटकों और छायाचित्रों के माध्यम से देखा जा सकता है। यहाँ के बौद्ध मंदिरों में इनके प्रदर्शन होते हैं और यहाँ इंडोनेशिया में भी चाहे वाली का हिंदू हो या जावा–सुमात्रा का मुसलमान, दोनों ही राम को अपना राष्ट्रिय महापुरुष और रामसाहित्य तथा राम संबंधी ऐतिहासिक अवशेषों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर समझता है।

जोग जाकार्ता से लगभग 15 मील की दूरी पर स्थित प्राम्बनन का मंदिर इस बात का साक्षी है, जिसकी प्रस्तर भित्तियों पर संपूर्ण रामकथा उत्कीर्ण है। वाली में रामलीला या रामकथा से संबंधित नृत्य–नाटिकाओं की लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस द्वीप का वातावरण पूर्णतः संस्कृतिमय है।

इंडोनेशिया की प्रसिद्ध रामायण का नाम रामायण काकविन है। मलेशिया में रामायण मनोरंजन का अच्छा माध्यम है। यहाँ चमड़े की पुतलियों द्वारा रात्रि में रामायण के प्रसंग दिखाए जाते हैं। इस देश की रामायण का नाम हेकायत सेरीरामा है जिसमें राम को विष्णु का अवतार माना गया है। यद्यपि इस पर इस्लाम का प्रभाव भी स्पष्ट है। सिंहल द्वीप में कवि नरेशकुमारदास ने जानकीहरणकाव्य की रचना की थी। बाद में इसका सिंहली भाषा में अनुवाद हुआ। आधुनिक काल में जॉन डी.सिल्वा ने रामायण का रूपान्तरण किया।[10]

संस्कृत को पश्चिमी देशों के विश्वविद्यालयों में स्थान मिलने के कारण वाल्मीकिरामायण से इनका परिचय शताब्दियों पूर्व हो गया था किन्तु तुलसीदासकृत रामचरित–मानस (रामायण) के प्रति पश्चिमी देशों का आश्चर्यजनक रुझान मुख्यतः गत शताब्दी से ही शुरू हुआ है, जिसका अनुवाद अभी तक लगभग सभी महत्त्वपूर्ण विश्वभाषाओं में हो गया है और हो भी रहा है।

फ्रांसीसी विद्वान् गासां दतासी ने 1839 में रामचरितमानस के सुंदरकांड का अनुवाद किया। फ्रांसीसीभाषा में मानस के अनुवाद की धारा पेरिस विश्विविद्यालय के श्रीवादिविलन ने आगे बढाई। अंग्रेजी में तुलसीदासकृत रामायण का पद्यानुवाद पादरी एटकिंस ने किया जो बहुत लोकप्रिय है। इसका प्रकाशन हिंदुस्तान टाइम्स में देवदास गांधी ने करवाया था। इसी प्रकार के अनुवाद जर्मनी सोवियत संघ आदि में हुए। रूसीभाषा में मानस का अनुवाद करके अलेक्साई वारान्निकोव ने भारत–रूस की सांस्कृतिक मैत्री की सबसे शक्तिशाली आधारशिला रखी। उनकी समाधि पर मानस की अर्द्धाली 'भलो भलाहिह पै लहै' लिखी है, जो उनके गांव कापोरोव में स्थित है। यह सेंट पीटर्सबर्ग के उत्तर में है।

चीन में वाल्मीकि–रामायण और रामचरित–मानस दोनों का पद्यानुवाद हो चुका है। डच, जर्मन, स्पेनिश, जापानी आदि भाषाओं में भी रामायण के अनुवाद हुए हैं। शोध–ग्रंथ के माध्यम से भी पश्चिमी देशों में यह धारा आगे बढ़ी है। माना जाता है कि हिंदीसाहित्य में सर्वप्रथम इटली निवासी डॉ. टेसीटोरी ने लिखा और फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में 1910 में उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि दी गई। विषय था– 'मानस और वाल्मीकिरामायण का तुलनात्मक अध्ययन'। दूसरा शोधग्रंथ लंदन विश्वविद्यालय में 1918 में जे.एन. कार्पेण्टर ने प्रस्तुत किया। विषय था– 'थियोलॉजी ऑफ तुलसीदास'।

संतोष का विषय है कि रामायण की यह विश्वव्यापी भूमिका प्रकाश में आने लगी है और इसमें अनेक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक धाराओं के साथ अन्ताराष्ट्रिय रामायण सम्मेलनों की एक धारा की भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसके अंतर्गत अब तक 12 देशों में 17 से ज्यादा रामायण सम्मेलन हो चुके हैं। भारत से शुरू होकर कई विश्व–परिक्रमाएँ कर चुकी यह सम्मेलन शृंखला एक विश्व सांस्कृति मंच के रूप में उभरकर आई है।[11]

रामायण लोकतन्त्र का आदर्श स्वरूप

विगत कुछ समय से विश्व के कुछ देशो में लोकतंत्र के असंतुलित होते जा रहे स्वरूप को लेकर बुद्धिजीवीवर्ग की चिंता बढ़ी है। रामायणकालीन भारत में लोक–स्पंदन का जीवन था, अब सत्ता के दण्ड का संचरण है।

लोकतंत्र के तत्त्वों में लोकाभिव्यक्ति, लोकानुभूति, लोकसंचरण और लोक में विलय की सांस्कृतिक अर्थों में व्याख्या रामायण में श्रीराम द्वारा अपनाये गए 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और 'सर्वभूतहिते रताः' जैसे लोकतंत्र के आधारस्तम्भ नियम है जिन नियमों को श्रीराम ने राजा होते हुए भी निभाया। यदि आज भी ऐसी लोकतंत्र की अवधारणा को आत्मसात् कर लिया जाये तो संभवतः आज विश्व में सर्वाधिक खुशहाल और संपन्न लोकतांत्रिक राष्ट्र बन गए होते।

निष्कर्ष–

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि विश्व मानचित्र के लगभग दो–तिहाई हिस्से को रामायण ने अनेक स्तरों पर और अनेक रूपों में प्रभावित किया है। आज भी मिस्र और रोम से लेकर वियतनाम, कंबोडिया और इंडोनेशिया तक रामायण संस्कृति का व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। वैश्विक जनमानस को जिस कथा ने सर्वाधिक प्रभावित किया है वह रामायण ही है।

यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि सदियों गुजर जाने के बाद भी रामायण वैश्विक सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र बिन्दु बनी हुई है। इसकी विश्व–व्यापकता अपने आप में कहीं न कहीं इस बात का इशारा करती है कि रामायण हमारी सभ्यता, जीवन और संस्कृति का आधारस्तम्भ ही है। जिस प्रकार रामायण के सारे चरित्र अपने अपने धर्म का पालन करते हैं। उसी प्रकार इन चरित्रों से सीख लेकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बना सकता है या ये कहा जाय कि रामायण का अनुसरण करके ही आज कि समस्त समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं अन्य कोई उपाय नहीं है।

सन्दर्भ

1. वाल्मीकिमरामायण– 1.1.1
2. वाल्मीकिरामायण– 1.2.36
3. काव्यप्रकाश (प्रथमोल्लास)– काव्यप्रयोजन
4. वाल्मीकिरामायण– 1.18.25
5. वाल्मीकिरामायण– 1.7.13
6. अथर्ववेद– 11.1.4
7. वाल्मीकिरामायण– 2.25.29, 2.56.31, 2.71.37–38, 3.1.5
8. समकालीन भारतीय साहित्य का इतिहास, पृ०– 105–106
9. समकालीन भारतीय साहित्य का इतिहास, पृ०– 132–133
10. समकालीन भारतीय साहित्य का इतिहास, पृ०– 179–180
11. समकालीन भारतीय साहित्य का इतिहास, पृ०– 214–215